

खिज़्र? या तक्रदीर?

हज़रत खिज़्र (अलैहिस्सलाम) और हमारी ज़िंदगी में तक्रदीर के असर की शानदार कहानी

मूसा (अलैहिस्सलाम) की उस यात्रा में—जो एक नेक बंदे के साथ थी जिसे बहुत से विद्वान खिज़्र कहते हैं—हम सीखते हैं कि घटनाओं की सतह गहरी हिकमत छिपा सकती है, जो केवल सब्र और तवक्कुल से समझ आती है।

यह कहानी सिखाती है कि तक्रदीर बारीक हिकमत से चलती है: जो नुकसान लगे वह बड़ी भलाई का रास्ता बन सकता है, और जो फायदा लगे वह हमारे सब्र और ईमान की परीक्षा भी हो सकता है।

ये चिंतन पाठक को अल्लाह पर भरोसा, उसकी तक्रदीर के बारे में अच्छा गुमान, और रोज़मर्रा की घटनाओं पर फ़ैसला करने से पहले रुकने की दावत देते हैं।